अंधेरे में चमगादड़

जॉन कॉफ़मैन





अंधेरे में चमगादड़

जॉन कॉफ़मैन



पिछली गर्मियों में जय गांव गया था. एक शाम वह अपने पिताजी के साथ गेंद से साथ कैच-कैच खेल रहा था. लगभग अंधेरा हो गया था और वह मुश्किल से गेंद देख पा रहा था. तभी, झप! कुछ उड़कर उसके पास से गुजरा और लगभग उसे छू गया. उस चीज़ ने अपने पंख फड़फड़ाए जैसे कि कोई बहुत बड़ा पतंगा हो.

जय डर के मारे कूदा. क्या वो कोई डरावना रात का पक्षी था? नहीं, उसके पिता ने कहा, वो कोई पक्षी नहीं था, वो एक चमगादड़ था.



चमगादड़!

चमगादड़ का नाम सुनकर जय को भूत-प्रेतों और राक्षसों की याद आने लगी. उसके पिता ने उससे पूछा कि क्या वह चमगादड़ को करीब से देखना चाहेगा. जय में इतनी हिम्मत नहीं थी लेकिन फिर भी उसने हाँ कह दी.

उसके पिता ने एक टॉर्च ली और वे पुराने खलिहान में वापस गए. वे एक अस्थिर सीढ़ी पर चढ़कर ऊपरी मंजिल पर पहुँचे. अचानक, कुछ काला सा जय के चेहरे के ठीक सामने से गुज़रा. वो एक चमगादड़ था!



चमगादड़ फड़फड़ाया, रुका और फिर गायब हो गया. जय के पिता ने टॉर्च से उसे देखा. चमगादड़ अपने नुकीले पंजों से उल्टा लटका हुआ था. उसके पंख उसके चारों ओर लिपटे हुए थे! उसकी छोटी-छोटी आँखें बाहर झाँक रही थीं. उसके बड़े कान लगातार हिल रहे थे और घूम रहे थे. जय ने इतना अजीब प्राणी उससे पहले कभी नहीं देखा था.







जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, जय ने चमगादड़ों की अंधेरी, उल्टी दुनिया के बारे में कई बातें खोजीं और जानीं. उसने पाया कि चमगादड़ पक्षियों से बहुत अलग होते हैं. चमगादड़ों के शरीर पर पंखों की जगह फर होता है. उनके पंख और पूंछ पतली हड्डियों पर फैली चमड़े की त्वचा से बने होते हैं.





चमगादड़ अंडे नहीं देते, जैसा कि पक्षी करते हैं. चमगादड़ के बच्चे उसी तरह जीवित पैदा होते हैं जैसे बिल्ली के बच्चे पैदा होते हैं. मादा चमगादड़ अपने बच्चों को अपने दूध से पालती है. यही कारण है कि चमगादड़ों को - चूहों, बिल्लियों, गायों और लोगों की तरह - स्तनधारी कहा जाता है. सभी स्तनधारियों में से, चमगादड़ ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो उड़ सकता है.





अधिकांश चमगादड़ रात में जागते हैं और दिन में सोते हैं. सूर्यास्त के समय वे जागते हैं और पुराने घरों और गुफाओं में अपने बसेरा बनाकर इधर-उधर उड़ते हैं. रात होने पर वे भोजन की तलाश में उड़ जाते हैं. दिन के उजाले में वे वापस लौटते हैं.

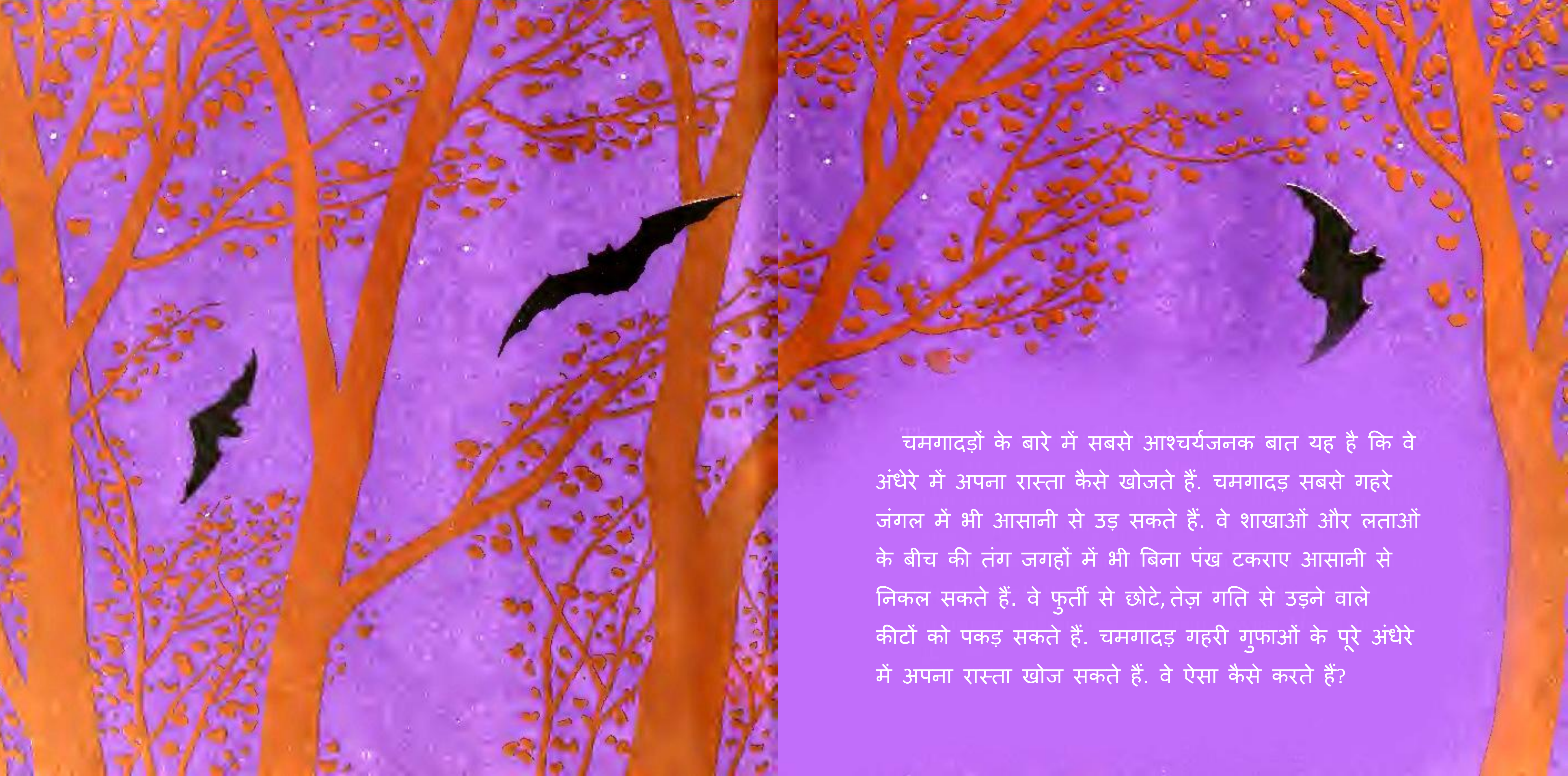






जय के खलिहान में रहने वाला चमगादड़ एक छोटा भूरा चमगादड़ था. छोटे भूरे चमगादड़ और अधिकांश अन्य छोटे चमगादड़ कीटभक्षी होते हैं. वे हवा में मक्खियों, मच्छरों, भृंगों और पतंगों को पकड़ते हैं.



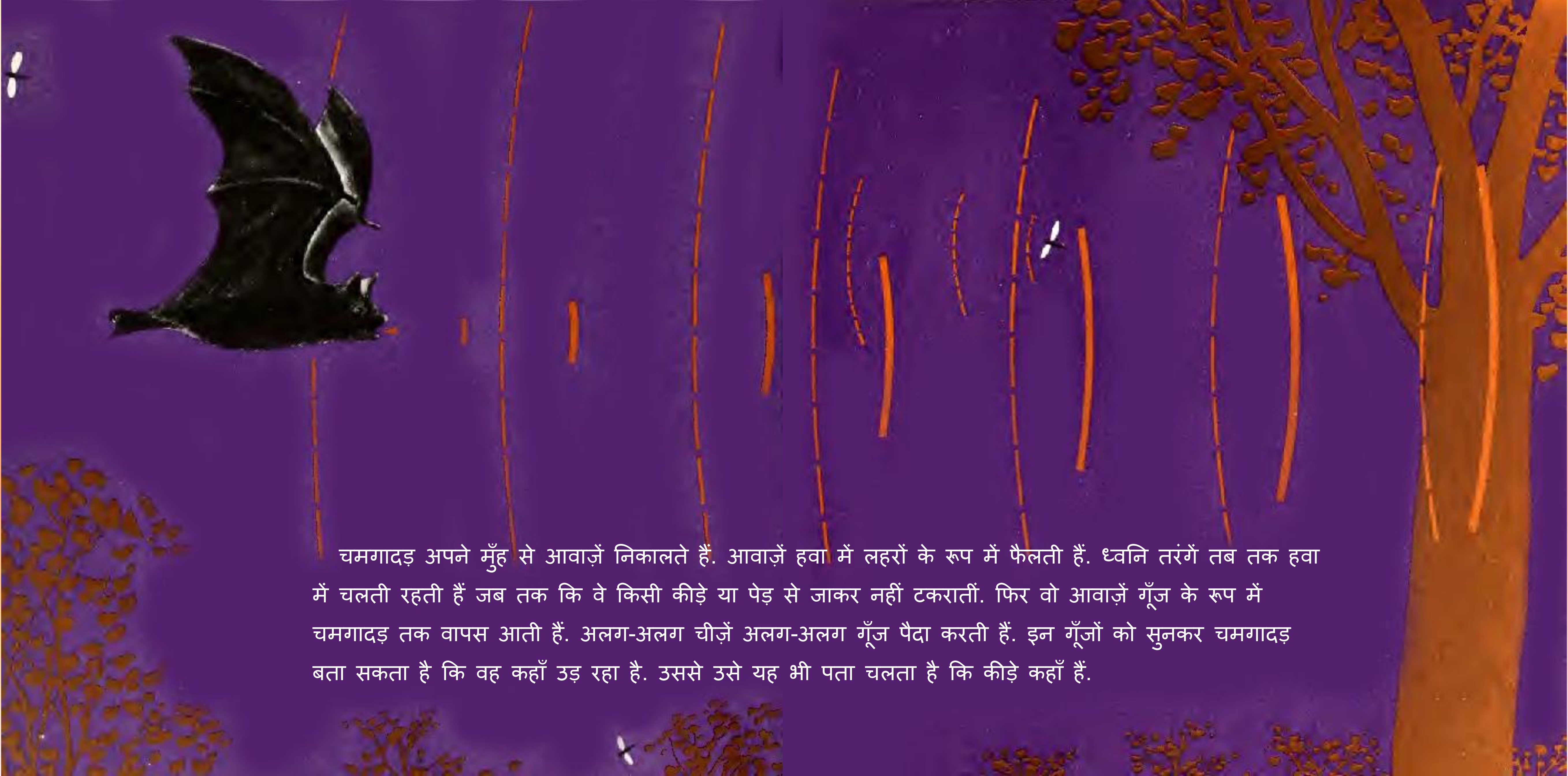


चमगादड़ों के बारे में सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि वे अंधेरे में अपना रास्ता कैसे खोजते हैं. चमगादड़ सबसे गहरे जंगल में भी आसानी से उड़ सकते हैं. वे शाखाओं और लताओं के बीच की तंग जगहों में भी बिना पंख टकराए आसानी से निकल सकते हैं. वे फुर्ती से छोटे, तेज़ गति से उड़ने वाले कीटों को पकड़ सकते हैं. चमगादड़ गहरी गुफाओं के पूरे अंधेरे में अपना रास्ता खोज सकते हैं. वे ऐसा कैसे करते हैं?



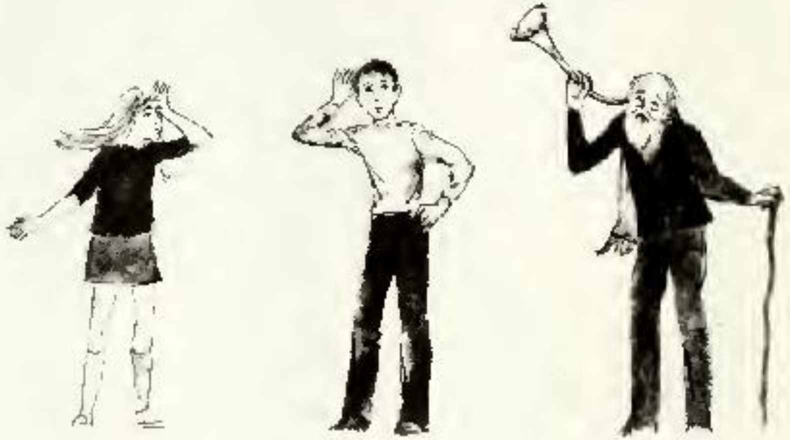
अधिकांश चमगादड़ उड़ते और शिकार करते समय अपनी आँखों का उपयोग नहीं करते हैं. इसका परीक्षण करने के लिए, वैज्ञानिकों ने चमगादड़ों की आँखों पर पट्टी बाँध दी. चमगादड़ फिर भी अपना रास्ता ढूँढ़ पाए. फिर उन्होंने आँखों पर से पट्टी हटाई और चमगादड़ों के कान ढँक दिए. अब चमगादड़ चीज़ों से टकराने लगे और वे कीड़ों को नहीं पकड़ पाए. इससे पता चला कि चमगादड़ों के लिए सुन पाना, देखने से ज़्यादा ज़रूरी होता है. चमगादड़ आवाज़ सुनकर अपना रास्ता ढूँढ़ते थे.



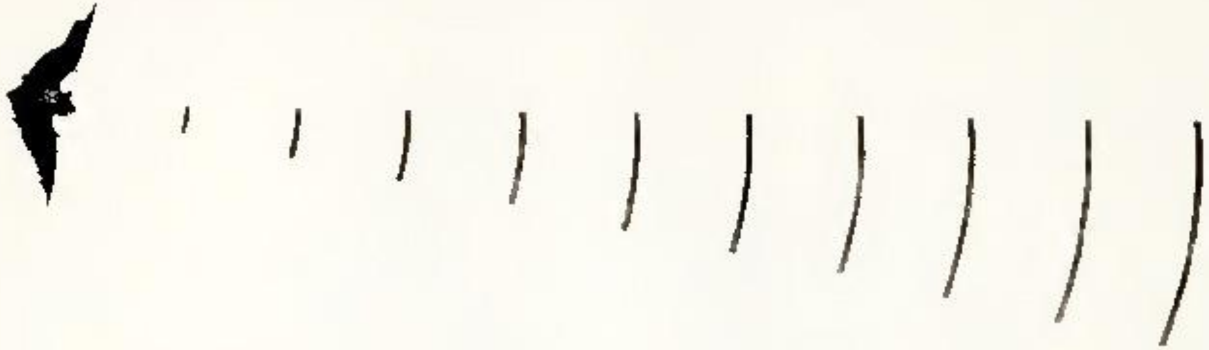


चमगादड़ अपने मुँह से आवाज़ें निकालते हैं. आवाज़ें हवा में लहरों के रूप में फैलती हैं. ध्वनि तरंगें तब तक हवा में चलती रहती हैं जब तक कि वे किसी कीड़े या पेड़ से जाकर नहीं टकरातीं. फिर वो आवाज़ें गूँज के रूप में चमगादड़ तक वापस आती हैं. अलग-अलग चीज़ें अलग-अलग गूँज पैदा करती हैं. इन गूँजों को सुनकर चमगादड़ बता सकता है कि वह कहाँ उड़ रहा है. उससे उसे यह भी पता चलता है कि कीड़े कहाँ हैं.

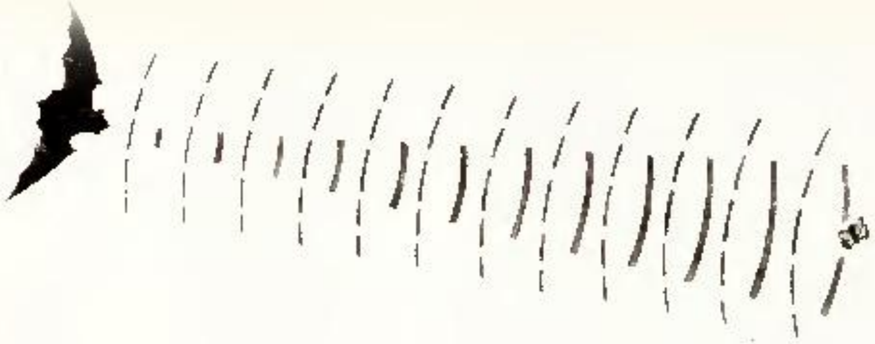




आपके कान चमगादड़ों की वो आवाज़ें नहीं सुन सकते. ये आवाज़ें इतनी ऊँची होती हैं कि लोग इन्हें सुन नहीं पाते. वैज्ञानिक इन आवाज़ों को अल्ट्रासोनिक कहते हैं.



जब चमगादड़ भोजन की तलाश में शिकार करता है, तो वह सबसे पहले धीमी गति से, पुट-पुट सिग्नल भेजता है. जब कीट से टकराकर प्रतिध्वनियाँ वापस लौटती हैं, तो चमगादड़ संकेतों की गति बढ़ा देता है.





जब वे उड़ते हैं, तो चमगादड़ अजीबोगरीब तरीके से इधर-उधर घूमते हैं. ऐसा इसलिए है क्योंकि वे कीटों का पीछा करते हुए तेज़ी से घूमते हैं. चमगादड़ इतने तेज़ होते हैं कि वे एक सेकंड में दो मक्खियाँ पकड़ सकते हैं. पंख की नोक के झटके से वे मच्छरों को अपनी मुड़ी हुई पूंछ की ओर फेंकते हैं. उनकी पूंछ कीटों को उनके मुँह में डाल लेती है. चमगादड़ वास्तव में कलाबाज़ी में माहिर होते हैं.



जय ने पाया कि चमगादड़ कई तरह के होते हैं. कुछ बहुत छोटे होते हैं.





सबसे बड़े चमगादड़ों के पंख पाँच फ़ीट तक फैले होते हैं.





ज़्यादातर छोटे चमगादड़ शिकार करने और अपना रास्ता खोजने के लिए ध्वनि-प्रतिध्वनियों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कुछ बड़े चमगादड़ ध्वनि-प्रतिध्वनियों का बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं करते हैं. इन बड़े चमगादड़ों के कान छोटे और आँखें बड़ी होती हैं जो अंधेरे में बहुत अच्छी तरह से चीज़ें पहचान लेती हैं. उनकी गंध की तेज़ भावना भी उन्हें भोजन खोजने में मदद करती है. उनमें से कुछ दिन के समय भी उड़ते हैं.



कुछ चमगादड़ खाने के लिए मछलियाँ पकड़ते हैं.

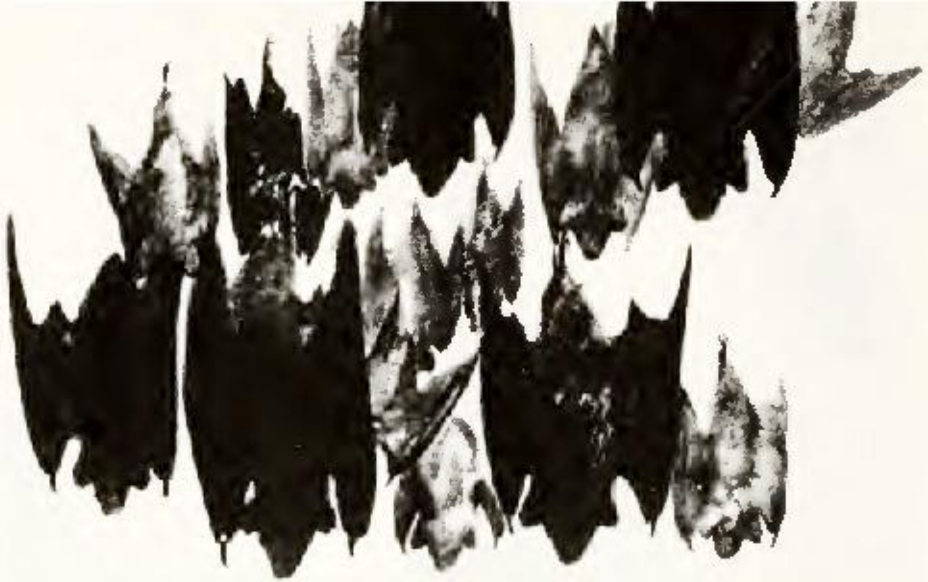




अन्य चमगादड़ फल खाते हैं.

कुछ चमगादड़ फूलों का रस पीते हैं.





गर्मियों के अंत तक, जय चमगादड़ों को नियमित रूप से देखने लगा था. उसने और उसके पिता ने एक पुराने घर में जहाँ कोई नहीं रहता था, चमगादड़ों की एक नर्सरी खोज निकाली. वहां पर माँ चमगादड़ और उसके बिना बाल वाले बच्चे एक साथ चिपककर बैठे थे. अंधेरा होने के बाद माँ चमगादड़ भोजन करने के लिए बाहर निकल गई. जय और उसके पिता ने उसे उगते चाँद के सफ़ेद प्रकाश में आगे-पीछे उड़ते हुए देखा.



शहर में वापस लौटकर जय अपने पिता के साथ चिड़ियाघर की एक विशेष इमारत में गया. वहां पर अंदर एकदम अँधेरा था, बस एक मंद लाल रोशनी जल रही थी. वहां के जानवरों को ऐसा लग रहा था जैसे रात हो गई हो. इमारत का एक हिस्सा जंगल जैसा था, जहाँ बहुत सारे चमगादड़ उड़ रही थे. दूसरी जगह चमगादड़ एक बड़े पानी के टैंक में मछली पकड़ रहे थे. वहाँ पर दुनिया भर से लाए हुए चमगादड़ थे.







जय और उसके पिता वहाँ बहुत देर तक रुके. जब वे लौट रहे थे, तो दो लड़के अंधेरे हॉल से भागते हुए आए. एक लड़का जय से टकरा गया. "सावधान!" उसके दोस्त ने कहा. "क्या तुम चमगादड़ की तरह अंधे हो!" लेकिन जय जानता था कि चमगादड़ अंधे नहीं होते. अगर वे अंधे भी होते, तो भी वे अपने कानों का इस्तेमाल करके बहुत अच्छी तरह से अपना रास्ता खोज लेते. अंधेरे में कोई चमगादड़ कभी उससे नहीं टकराता.



